तिरुच्चि दर्पण

திருச்சி தர்பண் TIRUCHY DARPAN

सीमा शुल्क मुख्य आयुक्त (निवारक) जोन, तिरुच्चिराप्पल्लि
नं 1 विल्लियम्स रोड, कन्टोनमेंट, तिरुच्चिराप्पल्लि 620 001
CHIEF COMMISSIONER OF CUSTOMS (PREVENTIVE) ZONE,
NO.1, WILLIAMS ROAD, CANTONMENT, TIRUCHIRAPPALLI 620 001

तिरुच्चि सीमा शुल्क हिन्दी पखवाड़ा समारोह

श्री रंजन कुमार राउतरे, मुख्य आयुक्त सभा को संबोधित करते हुए

हिन्दी दिवस में पुरस्कार प्राप्त करनेवाले बच्चे

तिरुच्चि दर्पण

திருச்சி தர்பண் **TIRUCHY DARPAN**

सीमा शुल्क (निवारक) जोन, तिरुच्चिराप्पल्लि
CUSTOMS (PREVENTIVE) ZONE, TIRUCHIRAPPALLI

अंक : 1 இதழ் : 1 ISSUE : 1

2018 जनवरी 2018 ஜனவரி 2018 January

பொறையொருங்கு மேல்வருங்கால் தாங்கி இறைவற்கு
இறையொருங்கு நேர்வது நாடு – திருவள்ளுவர்

एक साथ जब आ पड़े, जब भी सह सब भार।
देता जो राजस्व सब, है वह राष्ट्र अपार ॥

तिरुवल्लुवर

(हिन्दी अनुवाद – मु.गो. वेंकटकृष्णन)

A kingdom is that which can bear any burden that may be pressed on it (from adjoining kingdoms) and (yet) pay the full tribute to its sovereign.

Tiruvalluvar

प्रधान संपादक श्री रंजन कुमार राउतरे मुख्य आयुक्त	**Editor-in-Chief** Shri Ranjan Kumar Routray Chief Commissioner
प्रबंध संपादक श्री **अशोक** आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) तिरुच्चिराप्पल्लि श्री **के.वि.वि.जि. दिवाकर** आयुक्त, सीमा शुल्क गृह तूत्तुक्कुडि	**Managing Editors** Shri **Ashok** Commissioner, Customs (Preventive) Shri **K.V.V.G. Diwakar** Commissioner, Customs House, Tuticorin

संपादक दल

सर्वश्री / श्रीमती

रंजन कुमार राउतरे	मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), तिरुच्चिराप्पल्लि	प्रधान संपादक
अशोक	आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) तिरुच्चिराप्पल्लि	प्रबंध संपादक
के.वी.वी.जी. दिवाकर	आयुक्त, सीमा शुल्क गृह तूत्तुक्कुडि	प्रबंध संपादक
एस. ईश्वर रेड्डी	संयुक्त आयुक्त, सीमा शुल्क, (मुआका), तिरुच्चिराप्पल्लि	संपादक

भाषा संपादक

एम. राजराजेश्वरी	वरिष्ठ अनुवादक, मु आ(नि) कार्यालय	सर्व कार्यभारी संपादक
हिन्दी		
देवेन्द्र सिंह सिकरवार	कनिष्ठ अनुवादक, मु आ(नि) कार्यालय	
तमिल		
वी. स्वामिनाथन,	अधीक्षक, अपील, सीमा शुल्क मुख्यालय, तिरुच्चिराप्पल्लि	
अंग्रेजी		
एस. भास्करन	सहायक आयुक्त, मु आ(नि) कार्यालय, तिरुच्चिराप्पल्लि	मार्गदर्शन

EDITORIAL BOARD

S/Shri/Smt

Ranjan Kumar Routray	Chief Commissioner, Customs (Preventive)	Editor-in-Chief
Ashok	Commissioner, Customs (Preventive)	Managing Editor
K.V.V.G. Diwakar	Commissioner, Custom House, Tuticorin	Managing Editor
S. Eswar Reddy	Joint Commissioner, CC(P) Office	Editor

Language Editors

M. Rajarajeswari	Senior Translator, CC(P) Office Trichy	Editor in overall charge
Hindi		
Devendra Singh Sikarwar	Junior Translator, CC(P) Office Trichy	
Tamil		
S. Swaminathan,	Superintendent, Appeals, Customs Hqrs., Trichy	
English		
S. Baskaran	Assistant Commissioner, CC(P) Office Trichy	Guidance

The articles appearing in **Tiruchy Darpan** do not necessarily reflect the views of the Department. The responsibility for the opinions expressed and accuracy of the statements rests with the authors.

Front Cover Image : **Trichy Rockfort Temple**

सत्यमेव जयते
S. K. PANDA
Special Secretary & Member

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वित्त मंत्रालय / राजस्व विभाग
MINISTRY OF FINANCE / DEPARTMENT OF REVENUE
केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF EXCISE & CUSTOMS
नार्थ ब्लाक, नई दिल्ली-११० ००१
NORTH BLOCK, NEW DELHI-110 001
Tel. No. +91-11-23092303, Fax No. : +91-11-23092417

संदेश

मुझे यह जानकर बेहद खुशी हो रही है कि तिरुच्चि सीमा शुल्क (निवारक) ज़ोन अपनी त्रिभाषी पत्रिका 'तिरुच्चि दर्पण' का प्रवेशांक निकालने जा रहा है। राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार के लिए यह एक सार्थक कदम है। तमिलनाडु स्थित तिरुच्चि जोन से इस पत्रिका का प्रकाशन, जोन में कार्यरत अधिकारियों एवं स्टाफ की हिन्दी भाषा के प्रति आत्मीयता और उनके लगाव का द्योतक है। आशा है 'तिरुच्चि दर्पण' का अनवरत प्रकाशन होता रहेगा।

शुभ कामनाओं सहित।

(एस.के. पांडा)
जोनल सदस्य

प्रधान संपादक की कलम से .....

यह सचमुच प्रसन्नता का विषय है कि तिरुच्चिराप्पल्लि सीमा शुल्क (निवारक) जोन की ओर से एक त्रिभाषी पत्रिका "तिरुच्चि दर्पण" निकाली जा रही है। इस पत्रिका में हिन्दी के साथ-साथ प्रांतीय भाषा तमिल को भी यथोचित महत्व दिया गया है तथा अंग्रेजी भाषा की रचनाओं का भी समावेश किया गया है। हिन्दी राजभाषा होने के साथ-साथ हम सब भारतीयों के बीच संपर्क भाषा की भूमिका निभा रही है। इस प्रकार की गृह पत्रिका का प्रकाशन अधिकारियों एवं उनके परिवारजनों को अपनी सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का एक मौका प्रदान करता है तथा राजभाषा के कार्यान्वयन, संवर्धन एवं बहुमुखी विकास में सहायता करता है। उम्मीद है राजभाषा कार्यान्वयन के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से उठाया जा रहा यह कदम कार्यान्वयन के पथ पर मील का पत्थर साबित होगा।

आशा करता हूँ कि " तिरुच्चि दर्पण" में सीमा शुल्क जोन तिरुच्चि के कार्यकलापों का दर्शन अविरल होता रहेगा। सभी पाठकों की राय की प्रतीक्षा रहेगी। पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े संपादक मंडल और अन्य अधिकारी बधाई के पात्र हैं।

रंजन कुमार राउतरे
मुख्य आयुक्त

प्रबंध संपादक की कलम से.....

विभागीय त्रिभाषी पत्रिका "तिरुच्चि दर्पण" के प्रथम अंक का प्रकाशन बड़े ही हर्ष का विषय है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में विभागीय हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कदम है। सीमा शुल्क (निवारक) जोन तिरुच्चि द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका, सीमा शुल्क तिरुच्चि एवं तूतुक्कुडि के अधिकारियों एवं उनके परिवारजनों को अपनी रचना प्रस्तुत करने के लिए एक मंच प्रदान करेगी। भाषा विचारों के संप्रेषण का माध्यम होती है। किसी भी देश की भाषा वहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति का आईना होती है। अतः भाषा का समृद्ध होना देश की समृद्धि में सहायक होता है।

"तिरुच्चि दर्पण" का प्रकाशन इसी दिशा में उठाया गया सराहनीय कदम है। इसमें प्रकाशित रचनाएं अधिकारियों के भाषा का ज्ञान, भाषा के प्रति प्रेम एवं रुचि को दर्शातीं है। राजभाषा के कार्यान्यवन एवं प्रचार-प्रसार हेतु निश्चित रूप से यह एक सार्थक प्रयास है। प्रकाशन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुडे सभी लोगों को मेरी शुभकामनाएं। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

अशोक

अशोक

आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), तिरुच्चिराप्पल्लि

प्रबंध संपादक की कलम से.....

मुझे यह जानकर सुखद अनुभूति हो रही है कि सीमा शुल्क(निवारक) जोन, तिरुच्चि अपनी त्रिभाषी पत्रिका "तिरुच्चि दर्पण" के प्रथम अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिका का प्रकाशन शीर्षस्थ अधिकारियों का राजभाषा के कार्यान्वयन के प्रति प्रतिबद्धता का द्योतक है। पत्रिका जहाँ एक ओर केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग की वास्तविक तस्वीर पाठकों के सामने रखती है वहीं विभिन्न लेखों के माध्यम से रोचक जानकारियाँ भी प्रदान करती हैं। गृह पत्रिकाएं न केवल विभागीय अधिकारियों की सृजनात्मक प्रतिभा को उजागर करती हैं बल्कि ये देश में हिन्दी के प्रचार-प्रसार का एक सशक्त माध्यम भी होती हैं। इस पत्रिका में हिन्दी रचनाओं के साथ-साथ तमिल एवं अंग्रजी रचनाओं का भी समावेश है।

राजभाषा हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए यह आवश्यक है कि भाषा का प्रयोग बहु-आयामी होने के साथ-साथ, सरल, सहज और सबके लिए बोधगम्य हो। इस पत्रिका का प्रकाशन इसी दिशा में उठाया गया एक कदम है। मुझे आशा है कि हमारे सामूहिक, सार्थक एवं सतत प्रयास अवश्य सफलता प्रदान करेंगे।

मैं पत्रिका के संपादक मंडल को बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

के.वि.वि.जि.दिवाकर

के.वि.वि.जि. दिवाकर,
आयुक्त, सीमा शुल्क गृह, तूत्तुक्कुडि

संपादकीय .....

मुझे अति प्रसन्नता है कि सीमा शुल्क (निवारक) जोन, तिरुच्चि अपने अन्य दायित्वों के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए भी प्रयत्नशील है। इसी दिशा में एक प्रयास है **तिरुच्चि दर्पण** का प्रकाशन।

इस पत्रिका में विभिन्न रचनाओं द्वारा पाठकों को रोचक जानकारी एवं छायाचित्रों द्वारा कार्यालयों की गतिविधियों को दर्शाने का प्रयास किया गया है। मुख्य आयुक्त (निवारक) जोन तिरुच्चिराप्पल्लि की ओर से पत्रिका के प्रकाशन आरंभ करने का निर्णय और इसके विमोचन के लिए नियत तारीख के बीच का अंतराल भले ही बहुत कम था, लेकिन अधिकारियों एवं स्टाफ की सृजनात्मकता और रचनाओं के धारा प्रवाह ने इस पत्रिका को यथा नियोजित निकालने में मदद की। यह अधिकारियों के भाषाई ज्ञान एवं भाषाई प्रेम का द्योतक है साथ ही राजभाषा के कार्यान्वयन की आवश्यकता के प्रति जागरूकता को दर्शाता है।

तिरुच्चि दर्पण के प्रथम अंक को श्रेष्ठ एवं आकर्षक बनाने के प्रयास किए गए हैं। आशा है यह अंक आपको पसंद आएगा। आपके सुझावों का सदैव स्वागत है। पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहायक बने सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं रचनाकारों का मैं आभार प्रकट करता हूँ।

एस. ईश्वर रेड्डी

एस. ईश्वर रेड्डी
संयुक्त आयुक्त (मुआका)
तिरुच्चि

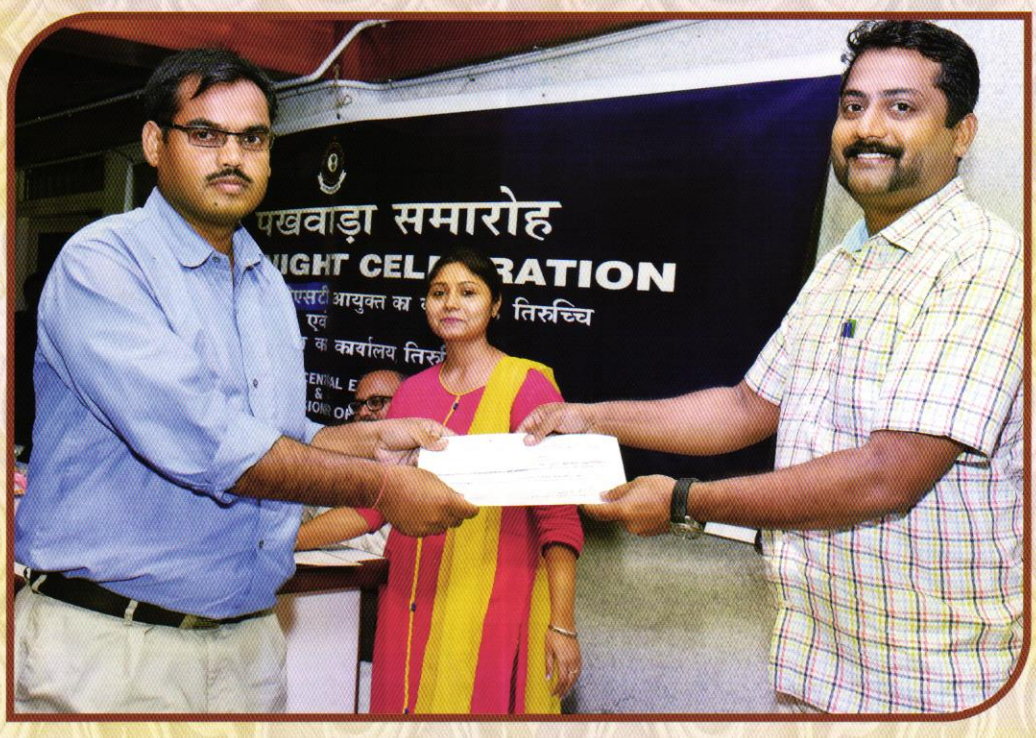

श्री जे. मुहम्मद नवफाल, संयुक्त आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) विजेता को पुरस्कार वितरित करते हुए

स्वच्छ भारत अभियान - मुख्य आयुक्त, श्री रंजन कुमार राउतरे सेवा संगम विद्यालय की एक छात्रा को स्वच्छता किट देते हुए

मुख्य आयुक्त, श्री रंजन कुमार राउतरे सेवा संगम विद्यालय की प्रधानाचार्य को इंसिनरेटर मशीन सौंपने संबंधी औपचारिक पत्र देते हुए। सेवा संगम विद्यालय की करेस्टपांडेन्ट और श्री अशोक, आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) भी साथ में उपस्थित हैं

तिरुच्चि सीमा शुल्क हिन्दी पखवाड़ा समारोह

·श्री अशोक, आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक)
विजेता को पुरस्कार वितरित करते हुए

·श्री जे.एम. केन्नडि, आयुक्त, जी एस टी एवं केन्द्रीय उत्पाद
शुल्क विजेता को पुरस्कार वितरित करते हुए

Ranjan Kumar Routray,
Chief Commissioner

FREEDOM

why do you lure me to freedom
endless joy and happiness of heaven
I am fine in my enchanted forest
with birds of all hues and colors
singing soulful music in to emptiness
and marigold flowers dancing
in the sweet breeze
and the small streams making
rhythmic sounds while it flows
ceaselessly to meet its destiny
in a long river bed
I find joy
in the beauty of the forests
the solitude is blissful
making out a strong case for prolonged
exile
in my enchanted forest
in its serene moments
and pleasant noises

आज़ादी
(अंग्रेज़ी मूल से अनुदित)

तुम क्यों लालच देते मुझको आज़ादी का
असीम आनंद और स्वर्ग की खुशी का
मैं खुश हूँ अपने मंत्रमुग्ध कानन में
तरह तरह के रंगीन पक्षियों के संग में
जो भावपूर्ण गीत गा रहे शून्यता में
और गेंदा फूल नाच रहे
मीठे समीर में
और छोटे झरने निरंतर बहते
तालबद्ध ध्वनियाँ करते-करते
अपनी किस्मत से मिलने
एक लंबे नदी तल में .
मुझे आनंद मिलता है
जंगल की सुंदरता में
एकांत सुखद है
मज़बूत कारण लंबे प्रवास का
मेरे मंत्रमुग्ध कानन में
उसके निर्मल पलों में
और सुखद कोलाहल में

Ranjan Kumar Routray,
Chief Commissioner

COSMOS

what I am asking for
is not the whole of universe
the sun the stars the galaxies the planets
what I am asking for
is not even a single planet
with life or without life in it
what I am asking for
is not even a fraction of existential reality
not even a toe hold of land

even then why the cosmos is conspiring
and whispering in to the woods
the fierce glaze of Pluto
the sickening lifelessness of mars
and the sun's temperature

the whole of being in wilderness
just for a handful of sky
at times blue and
at times pink and red

ब्रह्माण्ड

(अंग्रेज़ी मूल से अनुदित)

मैं जो मांगता हूँ
वह नहीं है पूरा संसार
सूरज, तारे, आकाश गंगा, ग्रह
मैं जो मांगता हूँ
वह एक ग्रह भी नहीं
जीवन सहित या बिन जीवन के
मैं जो मांगता हूँ
वो अस्तित्व की हकीकत का एक अंश भी नहीं
उंगली भर जमीन भी नहीं

फिर भी रच रहा है ब्रह्माण्ड षड्यंत्र
क्यों ? जंगल में फुसफुसाहट
प्लूटो की उग्र ग्लेज़
मार्स की घिनौनी निर्जीवता
और सूर्य का ताप

निर्जन प्रांत में रहना
एक मुट्ठी भर आसमान के लिए
जो कभी नीला और
कभी गुलाबी और लाल ।

हिन्दी पखवाड़ा 2017 के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार से सुसज्जित लेख

भारत में नदियों को जोड़ने की अवधारणा

शेखर सुमन
निरीक्षक

भारत में नदियों को जोड़ने का सपना सबसे पहले 19वीं सदी में सर आर्थर काटन ने देखा था। वे दक्षिण भारत की नदियों को हिमालयन क्षेत्र की नदियों से जोड़ना चाहते थे ताकि इसे जलमार्ग के रूप में विकसित करके आवागमन के प्रयोग में लाया जा सके। सन 1972 में प्रसिद्ध इंजीनियर डॉ. के.एल. राव ने पुनः इस अवधारणा का तकनीकी स्वरूप भारत सरकार के सामने प्रस्तुत किया। वे मूलतः दक्षिण भारत में पानी की समस्या के समाधान के रूप में इस अवधारणा को ले कर आए थे। इससे तकनीकी एवं वित्तीय समस्याएँ उत्पन्न होने का हवाला देकर हाशिम समिति ने इसे पूरी तरह नकार दिया।

15 अगस्त 2002 को भारत के महामहिम राष्ट्रपतिजी द्वारा दिए गए भाषण में नदी-जोड़ो परियोजना पर जोर दिया गया था। इसी को मुख्य बिंदु मानकर श्री रंजीत सिंह ने सर्वोच्च न्यायालय में पुनः याचिका फाइल की थी। तदुपरांत कर्नाटक उच्च न्यायाल ने इसके पक्ष में फैसला सुनाया एवं इस परियोजना को भविष्य के लिए बहुत लाभकारी बताया तथा आदेश दिया कि समिति का गठन करके इस विषय पर उचित रूप-रेखा तैयार की जाए। बाद में भारत सरकार ने इसका पूरा समर्थन किया तथा एन.डब्ल्यू.डी.ए (नेशनल वाटर डेवलपमेंट एजेंसी) नामक एजेंसी का गठन करके उसे इस परियोजना का कार्यभार सौंप दिया।

उपरोक्त सभी तथ्यों का ज़िक्र कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों के लिए किया गया है जो निम्नवत है:-

- जिस परियोजना को हाशिम कमेटी ने बेबुनियाद और वित्तीय समस्याओं का हवाला दे कर नकार दिया था उसे अचानक भारत सरकार ने कैसे मंजूर कर लिया?
- क्या इस परियोजना के कार्यान्वयन में आने वाली समस्याओं तथा भावी समस्याओं से आम जनता को अवगत कराया गया था अथवा क्या आम जनता की इसके लिए सम्मति थी?

इन सभी प्रश्नों पर गहन विचार-विमर्श के पश्चात इस परियोजना की अवधारणा के विविध पहलुओं पर मेरे विचार निम्नवत हैं:-

नदी का मतलब सिर्फ उसमें बहने वाला पानी नहीं होता बल्कि इसका मतलब नदी-तंत्र से जुड़ा है। इस परियोजना में पानी को ही नहीं अपितु नदी-तंत्र को भी ध्यान में रख कर उसके ईको सिस्टम को भी समझना होगा।

नदी में बहने वाले पानी को मुख्यतः तीन भागों में बाँटा जाता है। ऊपरी भाग में खनिज, मिट्टी एवं पोषक तत्व होते हैं। मध्य भाग का काम पानी और नदी की दिशा एवं गति को बरकरार रखना है। पानी और उसके द्वारा लाए गए सभी पदार्थों को समुद्र को सौंपना अंतिम भाग का काम होता है।

अगर इस परियोजना के तहत नदियों को जोड़ने का प्रयास किया जाए तो कुछ मूलभूत समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। नदी-तंत्र एक कुदरत चक्र के अंतर्गत आता है और इसमें परिवर्तन करना कुदरत से छेड़छाड़ कर के समान होगा जिसका परिणाम लाभकारी कम, हानिकारक अधिक हो सकता है।

इस परियोजना के तहत हिमालय क्षेत्र की नदियों को दक्षिण प्रायद्वीप नदियों से जोड़ने की कवायत चल रही है। गंगा को कावेरी से जोड़ने की रिपोर्ट है जिसमें पटना के पास गंगा के 60,000 क्यूबिक पानी को ताप्ती नर्मदा, गोदावरी पेन्नूर के द्वारा दक्षिण प्रायद्वीप के अप-स्ट्रीम में कावेरी से जोड़ा जाना है। इसके लिए लगभग 90 हजार करोड़ रुपये का वित्तीय निवेश किया जाना है। इस परियोजना को सफल बनाने के लिए सभी राजनीतिक दल एकमत हो गए हैं। लेकिन मतदाताओं को खुश करने के लि राजनीतिक दलों ने मूलभूत समस्याओं को दरकिनार कर दिया है। भा समस्याओं पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है। सर्वप्रथम हिमालय क्षेत्र की नदियाँ ऐसे क्षेत्र से गुजरती हैं जहाँ तीव्र गति से भूकंप आने के संकेत मि चुके हैं।

1897 में असम में 7.9 रिक्टर पैमाने की तीव्र गति का भूकंप आ था जिसके परिणाम स्वरूप ब्रह्मपुत्र नदी की दिशा तो बदल ही गई थी साथ वहाँ 7.6 मीटर ऊँची धारा से पानी का प्रवाह हो गया था। यह काफी शोचनी बात है। दूसरी बात यह है कि हम अपने पड़ोसी देश नेपाल, बांग्लादेश आदि सामंजस्य करके ही ब्रह्मपुत्र के पानी को स्थानांतरित कर पाएंगे।

एक सर्वेक्षण के अनुसार चीन उस स्थान जो तिब्बत से सटा हुआ है में बाँध बनाकर ब्रह्मपुत्र नदी के पानी को चीन की दूसरी नदियों में भेजन चाहता है। इससे इस परियोजना की सफलता पर प्रश्नचिह्न लग जाता है।

साथ ही दूसरे राज्यों से आने वाली नदियों को इस परियोजना जोड़ने के लिए आपसी बात-चीत और समझौता करने की आवश्यकता तथापि गौर करने वाली बात है कि अगर नदियों को आपस में जोड़ा जाता है बहुत से जंगल, अभयारण्य, पक्षी विहार जल मग्न हो सकते है।

दूसरे सर्वेक्षण के अनुसार बंगाल की खाड़ी एक ऐसी खाड़ी जिसके 10 से 20 मीटर ऊपरी परत का जल खारा नहीं है। इसका कार उसमें मिलने वाली हिमालय क्षेत्र की नदियों का पानी है। अगर इन नदियों की धारा मोड़ दी जाएंगी तो भारत में वर्षा जिसमें बंगाल की खाड़ी का महत्वपू योगदान है, कम हो जाएगी। इससे पारिस्थितिकी–तंत्र पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

अगर वर्षा कम हुई तो ग्रीन हाउस गैस का प्रभाव बढ़ जाएगा औ वह ओजोन परत पर बुरा प्रभाव डालेगा और इसके परिणामस्वरूप ग्लोब वार्मिंग की समस्या और अधिक बढ़ जाएगी।

नदी, सिर्फ नदी नहीं, नदी-तंत्र है जिसमें अनेक तरह के जीव ज रहते है। इसे पाइपलाइन की तरह नहीं जोड़ा जा सकता है।

திருக்குறள்
तिरुक्कुरल

मु.गो. वेंकटकृष्णन, एम.ए. अवकाशप्राप्त हिन्दी प्राध्यापक, अलगप्पा कालेज, कारैक्कुडि ने तमिलनाडु के संत तिरुवल्लुवर विरचित तमिल भाषा के प्रसिद्ध ग्रंथ का दोहा छंद में अनुवाद किया है । तमिल मूल तथा नागरी लिपि में अनुवाद किए तिरुक्कुरल का अध्याय 1 नीचे प्रस्तुत है।

அதிகாரம் -1 கடவுள் வாழ்த்து

ईश्वर स्तुति अध्याय-1

அகர முதல எழுத்தெல்லம் ஆதி
பகவன் முதற்றே உலகு

अक्षर सबके आदि में, है अकार का स्थान ।
अखिल लोक का आदि तो, रहा आदि भगवान ।।

கற்றதனா லாய பயனென்கொல் வாலறிவன்
நற்றாள் தொழாஅர் எனின்

विद्योपार्जन भी भला, क्या आएगा काम ।
श्रीपद पर सत्याज्ञ के, यदि नहिं किया प्रणाम ।।

மலர்மிசை ஏகினான் மாணடி சேர்ந்தார்
நிலமிசை நீடுவாழ் வார்

हृदय-पद्म-गत ईश के, पाद-पद्म जो पाय ।
श्रेयस्कर वरलोक में, चिरजीवी रह जाय ।।

வேண்டுதல் வேண்டாமை இலான்அடி சேர்ந்தார்க்கு
யாண்டும் இடும்மை இல

राग-द्वेष विहीन के, चरणाश्रित जो लोग ।
दु:ख न दे उनको कभी, भव बाधा का रोग ।।

இருள்சேர் இருவினையும் சேரா இறைவன்
பொருள்சேர் புகழ்புரிந்தார் மாட்டு

जो रहते हैं ईश के, सत्य भजन में लिप्त ।
अज्ञानाश्रित कर्म दो, उनको करें न लिप्त ।।

பொறிவாயில் ஐந்தவித்தான் பொய்தீர் ஒழுக்க
நெறிநின்றார் நீடுவாழ் வார்

पंचेन्द्रिय-निग्रह किए, प्रभु का किया विधान ।
धर्म-पंथ के पथिक जो, हो चिर आयुष्मान ।।

தனக்குவமை இல்லாதான் தாள்சேர்ந்தார்க் கல்லால்
மனக்கவலை மாற்றல் அரிது

ईश्वर उपमारहित का नहीं पदाश्रय-युक्त ।
तो निश्चय संभव नहीं, होना चिन्ता-मुक्त ।।

அறவாழி அந்தணன் தாள்சேர்ந்தார்க் கல்லால்
பிறவாழி நீத்தல் அரிது.

धर्म सिन्धु करुणेश के, शरणागत है धन्य ।
उसे छोड़ दुख-सिन्धु को, पार न पाये अन्य ।।

கோளில் பொறியின் குணமிலவே எண்குணத்தான்
தாளை வணங்காத் தலை

निष्क्रिय इन्द्रिय सदृश ही, 'सिर' है केवल नाम ।
अष्टगुणी के चरण पर, यदि नहिं किया प्रणाम ।।

பிறவிப் பெருங்கடல் நீந்துவர் நீந்தார்
இறைவன் அடிசேரா தார்

भव-सागर विस्तार से, पाते हैं निस्तार ।
ईश-शरण बिन जीव तो, कर नहीं पाए पार ।।

नवयुग 2018

बी. अश्वथराम
कक्षा - 7बी
पुत्र श्री एम. बालाजी, अधीक्षक

भूमिका:
सब को मेरा नमस्कार। सन 2018 में, भारत में कैसी तरक्की होनी चाहिए, मैंने इसके बारे में इस निबंध में लिखा है। भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है इसके बारे में नीचे दिया गया है।

प्रौद्योगिकी:
लगता है भारत में नया वर्ष आ गया है। नए वर्ष में भारत कैसे अपनी अर्थ व्यवस्था का प्रदर्शन करेगा ?
भारत ब्रिक्स देशों में चीन से भी अधिक तेज अर्थ व्यवस्था हाँसिल करेगा। माल और सेवा कर, विमुद्रीकरण (Demonetization) और सकल घरेलू उत्पाद का अच्छा फल मिलेगा। विकास के जरिए अर्थव्यवस्था आगे भी तेजी से बढ़ेगी।

कृषि:
सन् 2018 में किसान लोगों की तरक्की जरूर होनी चाहिए। क्योंकि हमारे देश की उन्नति गाँव से होती है। जब गाँव की सुरक्षा एवं खुशियों में वृद्धि होगी तभी हमारा जीवन और देश उन्नत हो सकता है। जैसे तेलंगाना में गाँव के लोगों के लिए मुफ्त बिजली दी जाती है वैसे सभी राज्यों में दी जानी चाहिए।

नदियाँ एवं स्वच्छता:
सन् 2018 में हिमालय एवं प्रायद्वीप की नदियों को जोड़ने के बारे में सोचना पड़ेगा।
आगे हमारे देश की स्वच्छता पर भी विचार करना चाहिए। देश वासियों को तंदुरुस्त होना चाहिए एवं अच्छा खाना चाहिए तभी बीमारी पर खर्च कम होगा। योग की शिक्षा सभी विद्यार्थियों को दी जानी चाहिए। इससे हमको अच्छी तंदुरुस्ती मिलेगी।

उपसंहार:
कुछ संगठनों जैसे अंतर-राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने कहा है कि भारत, ब्रिटेन और फ्रांस को पीछे छोड़ कर दुनिया की सबसे बड़ी पाँचवी अर्थव्यवसथा बन गया है। इसका कारण विमुद्रीकरण, सस्ती उर्जा, डिजिटल क्रांति है।
इसको आगे जारी रखने के लिए हमको यथासंभव प्रयास करना चाहिए जिससे हमारे देश में उन्नति होती रहे।

मुंडी का मूल्य

सम्राट अशोक रथ में जा रहे थे। यशोगान के नारे गूँज रहे थे। पुष्प बरसाए जा रहे थे। अशोक ने दूर से आते हुए साधू को देखा तो झट से रथ से नीचे उतरे और पास जाकर उनके चरणों में अपना सिर रख दिया , प्रणाम किया।

"कहाँ तो गगनगूँजी यशोगान..... कहाँ तो चहुँ दिशा के राजा हमारे सम्राट के चरण-सेवन की इच्छा करें और कहाँ हमारे शहंशाह एक नंगे पैरवाले साधू के कदमों में सिर रखें! हमारे महाराज का सिर किसी के कदमों में झुके यह हमें अच्छा नहीं लगता " अशोक के अति निकटवर्ती वजीर ने निवेदन किया।

अशोक मुस्कराए। एक दिन मौका पाकर उन्होंने उस वजीर को एक थैला दिया जिसमें मछली, बकरा, सूकर, कूकर आदि की मुंडियों के साथ मानव मुंडी भी थी। अशोक ने वजीर से कहा।:

"इन मुंडियों को बेच कर आओ"

और सब मुंडियाँ बिक गई लेकिन मानव मुंडी नहीं बिकी। यह जानकर अशोक ने कहा – "मुफ्त में दे आओ, ऊपर से कुछ देदो"

दोपहर को दो बजे वह थका-माँदा वजीर लौटकर कहता है –"नाथ मनुष्य की मुंडी कोई नहीं लेता। लोग मुझे मूर्ख कह रहे हैं क्योंकि यह मुंडी किसी के काम आएगी नहीं।"

अशोक ने कहा – "मैं तुमको यही समझाना चाहता था। जरा सा दम टूट गया तो यह खोपड़ी किसी काम में नहीं आएगी। जो किसी काम में नहीं आएगी , निकम्मी हो जाएगी, उसको अगर मालिक के लिए, मालिक के प्यारे किसी संत के चरणों में झुका भी दिया तो मैंने गलती क्या की ?"

अभिमान आता है नासमझी से। विनय आती है समझ से।

"मेरा लक्ष्य भ्रष्टाचार मुक्त भारत"

शेखर सुमन निरीक्षक

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार से सुसज्जित लेख

भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ होता है – "भ्रष्ट आचरण" "Bad Conduct"

भ्रष्टाचार और उससे मुक्त भारत के प्रसंग में यह जानना जरूरी है कि आखिर ये है क्या?, कैसे आया है? अभी इसकी स्थिति क्या है? इसके निवारण के लिए मेरे सुझाव निम्नवत है:-

भ्रष्टाचार को समझने के लिए, एक छोटी सी कहानी का वर्णन कर रहा हूँ-

एक स्कूल में एक कुल्फी वाला प्रतिदिन कुल्फी बेचने आता था। सारे बच्चे हाफ-टाइम में उससे कुल्फी खरीदते थे। लेकिन कुछ बच्चे मौके का फायदा उठा कर उसकी कुल्फी चुरा लेते थे। कुल्फी वाला यह समझ तो रहा था कि कुछ कुल्फी कम हो जाती है लेकिन वह किसी को रंगे हाथ नहीं पकड़ पाता था। एक दिन उसने एक लड़के को पकड़ लिया और उससे बहस होने लगी। मौके का फायदा उठा कर बाकी लड़के भी कुल्फी लेकर भागने लगे। अंत में कुल्फी वाले को यह समझ में आ गया कि अब इनको रोक पाना मुश्किल है तो वह भी दोनों हाथों में भर कर कुल्फी खाने लगा।

यही हाल है हमारे देश का – कि लोग दूसरों के बहकावे में आकर खुद लूट का हिस्सा बन रहे हैं साथ ही खुद ही खुद को लूट भी रहे हैं। इससे इतना तो समझा जा ही सकता है कि भारत को भ्रष्टाचार रूपी केंसर से बचाने के लिए रोकथाम जरूरी है।

आज स्कूल और अस्पताल में एडमीशन, ट्रेन टिकट रिजर्वेशन, सरकारी और गैर सरकारी नौकरी, पासपोर्ट या अन्य दस्तावेज बनवाने या सुधरवाने हेतु कोई भी ऐसा काम जो एक आम आदमी बिना रिश्वत दिए कर सकता है, नहीं हो पाता।

- एक जरूरी ऑकड़ों के हिसाब से सन 2009 के बाद अभी तक 54% भारतीय अपना या अपनों का काम निकालने के लिए रिश्वत देते हैं।
- दूसरे ऑकड़ों के अनुसार एशिया के 17 देशों में भ्रष्टाचार के मामलों में भारत का चौथा स्थान है और विश्व में 84वाँ स्थान है।
- एक अनुमानित ऑकड़े के अनुसार सन 1992 के बाद भारत में कुल 84 लाख करोड़ से ज्यादा रुपयों का घोटाला हो चुका है।

भ्रष्टाचार की उत्पत्ति तो मुगलों के समय से ही हो गई थी लेकिन भारत की आजादी के बाद इसके दुष्परिणाम अधिक सामने आए हैं।

गांधी नेहरू और पटेल साहब ने जिस आजाद भारत की कल्पना की थी वैसा भारत बनाने में भ्रष्टाचार काफी मुश्किल और जटिल समस्या पैदा करता है।

सन 1947 के बाद राजनीतिज्ञों ने अपने फायदे और प्रसिद्धि के लिए नियमों में बदलाव उसमें तोड़ मरोड़ तथा उसके बाद उसके प्रयोग को गरीब और आमजनता से दूर रखने में ज्यादा ध्यान दिया है।

राजनेता, सरकारी कर्मचारी और गैर- सरकारी ठेकेदारों, बेईमानों के कारण आज ग्रामीण क्षेत्रों में कोई भी योजना अपनी मूल अवस्था में पहुँच ही नहीं पाती है।

चाहे उच्च वर्ग हो, व्यापारी वर्ग हो, सरकारी और गैर सरकारी संस्था में काम करने वाले लोग हों या फिर आम आदमी, भ्रष्टाचार रुपी संक्रमण से सभी वर्ग प्रभावित हैं। यह ऐसी समस्या है जो भारत के विकास को होने नहीं दे रही है।

आज हम विश्व में अलग पहचान बनाने में सफल रहे है। चाहे वह विज्ञान हो, तकनीकी मामले हों, शिक्षा का क्षेत्र हो या स्वास्थ्य का क्षेत्र हो, आजादी के बाद हम हर क्षेत्र में काफी संपन्न हुए है। परंतु हमें जहाँ होना चाहिए था भ्रष्टाचार के कारण आज हम वहाँ नहीं है।

भारत को कभी सोने की चिड़िया बुलाया जाता था। आज हमारा रुपया विदेशी मुद्राओं की अपेक्षा काफी लुढ़का हुआ है। मेरी समझ से इसका एक कारण यह भी है कि विश्व के बड़े-बड़े अमीरों में भारत के अमीर भी शामिल है लेकिन भारत गरीब है।

हमारे देश में अमीरों का जितना पैसा स्विस बैंक में है उसका 70 % भी वापस आ जाए तो वह हमारी जीडीपी के छःगुना के बराबर हो सकता है ऐसा अंदाजा है। इससे हमारे देश में भ्रष्टाचार की स्थिति को समझा जा सकता है।

जिस तरह से खाने पीने की चीजों में मिलावट और उसके बाद भी मंहगे दामों पर खरीदने की मजबूरी है ठीक उसी प्रकार इस देश में रहना है तो भ्रष्टाचार की मजबूरी भी सीखनी पड़ती है।

भ्रष्टाचार के लिए सिर्फ एक पक्ष जिम्मेदार नहीं है। हाँ ये जरूर है कि इसके कारण आम आदमी ज्यादा परेशान है। अगर इसके दूसरे पहलू पर गौर किया जाए तो आम आदमी भी उतना ही जिम्मेदार है जितना कि भ्रष्टाचारी लोग।

भ्रष्टाचार निवारण के लिए मेरे सुझाव निम्नलिखित हैं:-

- जन संख्या रोकथाम : जनसंख्या वृद्धि सभी समस्याओं की जननी है। जनसंख्या के मामले में भारत भी बहुत आगे है। इसलिए हमको इस पर विचार करना आवश्यक है तथा हम दो और हमारा एक के नारे को अपनाना आवश्यक है।
- साक्षरता : किसी भी राष्ट्र के विकास में शिक्षा का बहुत बड़ा योग दान रहा है। शिक्षित लोगों की संख्या जितनी ज्यादा होगी भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उतनी बुलंद होगी।
- भ्रष्टाचार के खिलाफ जन-जागरण के लिए ग्रामीण स्तर पर बड़े मंच का अभाव: जैसा कि पहले वर्णन किया जा चुका है कि ऑकड़ों के हिसाब से 2009 के बाद भी 54% से अधिक भारतीय अपना काम निकालने के लिए रिश्वत देते हैं या लेते हैं। यह जन-जागरण के बड़े मंच के अभाव में अभी तक जारी है।
- सरकारी और गैर सरकारी संस्थानों में नियुक्ति हो या कोई अन्य कार्य सभी में पारदर्शिता होनी चाहिए । साथ ही पुलिस और विजिलेंस विभाग को स्वतंत्र रूप से कार्य करना चाहिए।
- अपनी क्षणिक खुशी और आरामदेह जिंदगी जीने के लिए पद, पावर और नीतियों का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। भविष्य में भी ऐसा न हो सके इसके लिए सभी आसूचना संस्थाओं के स्वतंत्र रूप से कार्य करने के लिए सख्त कानून बनाए जाने चाहिए। खासकर अपने फायदा के लिए कोई व्यक्ति विशेष, पार्टी विशेष अध्यादेश लाकर कानून का दुरुपयोग न कर सके।
- जल्दी का काम शैतान का : हम हर काम जल्दी चाहते हैं या दूसरे शब्दों में कहें तो हाथों-हाथ करवाना चाहते हैं। पद पर बैठे हुए लोग इसका फायदा उठाते है तथा हामारी भ्रष्टाचार में संलिप्तता हो जाती है। इससे हमेशा बचना होगा।
- संक्षेप में भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनाना मुश्किल जरूर है लेकिन नामुमकिन नहीं है। नीतियों के कार्यान्वयन, नियमों का अनुपालन, क्रय-विक्रय, सरकारी तथा गैरसरकारी सेवाओं में पारदर्शिता लाकर तथा इसके लिए तकनीकी का समुचित प्रयोग करके इसे मुमकिन बनाया जा सकता है।

चुटकुले

संकलन : नवलेश प्रजापति, निरीक्षक

- माँ और बीबी में क्या अंतर होता है?
  उत्तर – माँ बोलना सिखाती है और बीबी चुप रहना।
- राजू- डॉक्टर साहब दो साल पहले मुझे बुखार हुआ था।
  डॉक्टर – तो अब क्या परेशानी है?
  राजू – आपने नहाने के लिए मना किया था , आज इधर से गुजर रहा था तो सोचा कि पूछता-चलूं। "अब नहा लूं क्या" ?
- पति – मेरी शर्ट उल्टी करके प्रेस करना।
  पत्नी – ठीक है।
  (दस मिनट बाद)
  पति – मेरी शर्ट प्रेस हो गई क्या ?
  पत्नी – नहीं।
  पति - क्यों?
  पत्नी – उल्टी नहीं आ रही है।
- एक चोर मंदिर में तिजोरी लूटने गया। तिजोरी पर लिखा था – बटन दबाओं ताला तोड़ने की जरूरत नहीं है। बटन दबाते ही वहाँ पुलिस पहुँच गई।
  पुलिस – सफाई में कुछ कहना है?
  चोर – माँ कसम आज इनसानियत से विश्वास उठगया।
- मंदिर के बाहर एक बिखारी – भगवान तेरी जोड़ी सलामत रखे।
  राजू – मेरी अभी तक शादी तो हुई नहीं है।
  बिखारी – मैं तेरे नए जूतों की जोड़ी की सलामती मांग रहा हूँ।
- कोयल ने कौआ से पूछा – अभी तक शादी क्यों नहीं की?
  कौआ – बिना शादी के ही जिंदगी में इतनी काँव-काँव है तो शादी के बाद क्या होगा?
- पति ने पत्नी से गुस्से में कहा- तेरी जैसी पचास मिल जाएंगी मुझको !
  पत्नी – अभी भी मेरी जैसी ही चाहिए तुमको?

चंदा मामा

अस्मिता सिकरवार
पौत्री – देवेन्द्र सिंह सिकरवार,
कनिष्ठ अनुवादक

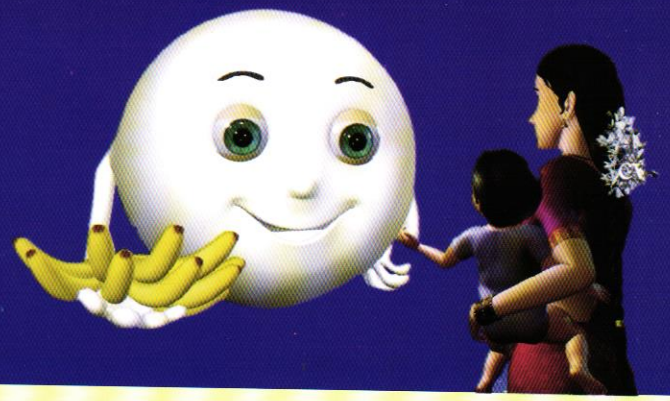

चंदा मामा कितने अच्छे, रोज क्यों नहीं आते हो।
कभी-कभी तो खूब चमकते, कभी-कभी छिप जाते हो।
कभी-कभी बढ़ते जाते हो, कभी-कभी छोटे होते।
आखिर क्या करना है तुमको, यह हम समझ नहीं पाते।
जब-जब अधिक अंधेरा होता, तब-तब तुम छिप जाते हो।
क्या अँधियारी रातों में तुम, आने से डर जाते हो।।
अगर नहीं डर तुमको लगता, तो तुम रोज-रोज आना।
अँधियारी रातों में अपनी, चंद्र प्रभा बिखरा जाना।

या छिपना है खेल तुम्हारा, जो तुम छोड़ नहीं पाते।
खेल, खेल कर वही पुराना, क्या तुम ऊब नहीं जाते।
मेरे मोबाइल में देखो, क्या-क्या नए खेल होते।
नए-नए नित खेल खेलते, फिर भी खत्म नहीं होते।
एक बार धरती पर आना, मैं मोबाइल दिलवा दूंगी।
आधार कार्ड लेकर के आना, "जीओ" सिम डलवा दूंगी।

थाल में जल भर कर रखने से, उसमें तो आ जाते हो।
किन्तु जरा भी छू लेने से, तुम गायब हो जाते हो।
जल में दिखते, नभ में दिखते यह कैसे कर पाते हो।
नाना रूप बना सकते, तो रोज क्यों नहीं आते हो।
चंदा मामा, बोले, बच्चो, मैं सच-सच बतलाता हूँ।
थोड़ा-थोड़ा, बाँट-बाँट कर, सबके पास में जाता हूँ।

माँ

विक्रम कुमार, निरीक्षक
सीमा शुल्क गृह, तूतुक्कुडि

माँ तू है तो मेरा संसार है
तू ही मेरे जीवन का आधार है।
ये सब कुछ होते हुए भी बिन तेरे सब बेकार है
तेरे बिना हर संतान लाचार है।
माँ तू है तो मेरा संसार है
तू ही जिंदगी का सार है
हर खुशी मिले जहाँ ऐसा तू आधार है।
माँ तू है तो मेरा संसार है
माँ तू ने खुद को मिटा कर
अपने सुखों को भुला कर
मेरे जीवन को आकार दिया है
अपनी इच्छाओं को दबा कर मेरा यह जीवन साकार किया है।
माँ तू है तो मेरा संसार है
तू ही मेरे जीवन का आधार है।

मां तेरे बिना जीवन में अँधेरा है।
बिन तेरे कहाँ सुखी सवेरा है।
ममता की मूर्ति दया और प्यार की प्रतिकृति
मेरे जीवन की आकृति सब तुझसे है।
बस, तुझ से ही है
मेरी सफलताओं का आधार है।
मेरी खुशियों का तू ही सार है।
तू है तो जीवन मेरा खुशियों से सराबोर है।
माँ तू ही मेरे कर्म का विचार है।
तुझ से ही है शोहरत मेरी
दुनिया की सबसे बड़ी दौलत मेरी
तू ही मेरा मान है
तू ही मेरा सम्मान है।
माँ तू है तो मेरा संसार है
तू ही मेरी खुशियों का आधार है।

अभाव का ही अभाव

संकलन – देवेन्द्र सिंह सिकरवार,
कनिष्ठ अनुवादक,

कश्मीर में तकस्त्र , न्यायाचार्य पंडित रहते थे। उन्होंने चार पुस्तकों की रचना की थी, जिनसे बड़े-बड़े विद्वान प्रभावित थे। इतनी विद्वता होते हुए भी उनका जीवन अत्यंत सीधा-सादा एवं सरल था। उनकी पत्नी भी उन्हीं के समान सरल एवं सीधा-सादा जीवन-यापन करने वाली साध्वी थीं। उनके पास संपत्ति के नाम पर एक चटाई, लेखनी कागज एवं कुछ पुस्तकें तथा दो जोड़ी वस्त्र थे। वे कभी किसी से कुछ माँगते न थे और न ही दान का खाते थे। उनकी पत्नी जंगल से मूँज काटकर लातीं, उससे रस्सी बनातीं और उसे बेचकर अनाज-सब्जी आदि खरीद लातीं। फिर भोजन बना कर पति को प्रेम से खिलातीं और घर के अन्य कामकाज करतीं। पति को तो यह पता भी न रहता कि घर में कुछ है या नहीं। वे तो बस, अपने अध्ययन-मनन में मस्त रहते।

ऐसी महान साध्वी स्त्रियाँ भी इस भारतभूमि में हो चुकी हैं। धीरे-धीरे पंडित जी की ख्याति अन्य देशों में भी फैलने लगी। अन्य देशों के विद्वान लोग आकर कश्मीर के राजा शंकरदेव से कहने लगे:

"राजन ! जिस देश में विद्वान, धर्मात्मा, पवित्रात्मा दुख पाते हैं, उस देश के राजा को पाप लगता है।

आपके देश में भी एक ऐसे पवित्रात्मा विद्वान हैं, जिनके पास खाने पीने का ठिकाना नहीं है, फिर भी आप उनकी कोई सँभाल नहीं रखते?"

यह सुनकर राजा स्वयं पंडितजी की कुटिया में पहुँच गया। हाथ जोड़कर उनसे प्रार्थना करने लगा:

"भगवन् ! आपके पास कोई कमी तो नहीं है?"

पंडितजी: "मैंने जो चार ग्रन्थ लिखे हैं, उनमें मुझे तो कोई कमी नहीं दिखती। आपको कोई कमी लगती हो तो बताओ।"

राजा: "भगवन् ! मैं शब्दों की, ग्रन्थ की कमी नहीं पूछता हूँ, वरन् अन्न जल वस्त्र आदि घर के व्यवहार की चीजों की कमी पूछ रहा हूँ।"

पंडितजी: "उसका मुझे कोई पता नहीं है। मेरा तो केवल एक प्रभु से नाता है। उसी के स्मरण में इतना तल्लीन रहता हूँ कि जो भगवान की स्मृति में तल्लीन रहता है, उसके द्वार पर सम्राट स्वयं आ जाते हैं, फिर भी उसे कोई परवाह नहीं रहती।

फिर राजा पंडित जी से आज्ञा लेकर उनकी धर्म पत्नी के समक्ष जाकर प्रणाम करते हुए बोला: "माँ !

आपके यहाँ अन्न-जल-वस्त्र आदि किसी भी चीज की कमी हो तो आज्ञा करें, ताकि मैं आप लोगों की कुछ सेवा कर सकूँ। "

पंडित जी की धर्मपत्नी भी कोई साधारण नारी तो थीं नहीं। वे भगवत्परायण नारी थीं। सच पूछो तो नारी के रूप में मानों साक्षात् नारायणी ही थीं। वे बोलीं- "नदियाँ जल दे रही हैं, सूर्य प्रकाश दे रहा है, प्राणों के लिए आवश्यक पवन बह ही रही है एवं सबको सत्ता देनेवाला वह सर्व सत्ताधीश परमात्मा हमारे साथ ही है, फिर कमी किस बात की? राजन ! शाम तक का आटा पड़ा है, लकड़ियाँ भी दो दिन जल सकें, इतनी हैं। -मसाला भी कल तक का है। पक्षियों के पास तो शाम तक का भी ठिकाना नहीं होता, फिर भी वे आनंद से जी लेते हैं। मेरे पास तो कल तक का है। राजन ! मेरे वस्त्र अभी इतने फटे नहीं कि मैं उन्हें पहन न सकूँ ? बिछाने के लिए चटाई एवं ओढ़ने के लिए चादर भी है।.... और मैं क्या कहूँ? मेरी चूड़ी अमर है और सबमें बसे हुए मेरे पति का तत्व मुझमें भी धड़क रहा है। मुझे अभाव किस बात का, बेटा !"

पंडितजी की धर्म पत्नी की दिव्यता को देखकर राजा भी गदगद हो उठा एवं चरणों में गिरकर बोला:

"माँ ! आप गृहिणी हैं कि तपिस्वनी, यह कहना मुश्किल है। माँ ! मैं बड़भागी हूँ कि आपके दर्शन का सौभाग्य पा सका। आपके चरणों में मेरे कोटि-कोटि प्रणाम हैं !"

जो लोग परमात्मा का निरंतर स्मरण करते रहते हैं, उन्हें वेश बदलने की फुर्सत ही नहीं होती, जरूरत भी नहीं होती। जो परमात्मा के चिंतन में तल्लीन हैं, उन्हें संसार के अभाव का पता ही नहीं होता। कोई सम्राट आकर उनका आदर करे तो उन्हें हर्ष नहीं होता, उसके प्रति आकर्षण नहीं होता। ऐसे ही यिद कोई मूर्ख आकर अनादर कर दे तो शोक नहीं होता, क्योंकि हर्ष -शोक तो वृत्ति से भासते हैं। जिनकी वृत्ति परमात्मा के शरण चली गयी है, उन्हें हर्ष -शोक, सुख-दुख के प्रसंग सत्य ही नहीं भासते तो डिगा कैसे सकते हैं। उन्हें अभाव कैसे डिगा सकता है? उनके आगे अभाव का भी अभाव हो जाता है।

MY VISION

Corruption Free INDIA

M. Rajarajeswari,
Senior Translator

(The first Prize winning Essay in the Essay Competition conducted during the Vigilance Awareness Week, 2017)

India, my homeland, the country in which I was born and brought up, the country which has given me everything- social security, educational avenues, means of livelihood should top the list of developed countries of the world, is the dream of any patriotic Indian. As a patriotic Indian I too visualize my India to be a nation, which I can proudly boast to be a citizen of.

India with its vast and rich human resources, mineral resources, agricultural resources and above all intellectual minds to develop many such resources is not developing at the expected pace. Amongst the many factors that act as impediments in the path of development is corruption.

Corruption is like cancer – spreading through all walks of life and has eaten up the roots of social and ethical values of the nation. Today, we cannot imagine a single walk of life where corruption has not spread its tentacles and stunted the growth of the nation – economically, technologically and scientifically.

The devastating effect of corruption is felt more when we see that it has pervaded even into the educational front. When a medical seat is sold by auction, the undeserving student, by virtue of having the capacity to buy gets a medical seat and the seat of deserving, bright student, with aspirations to serve the nation as a doctor, is usurped – then it spells doom for the nation and its development agenda.

Corruption is omnipotent and omnipresent in India. The political class, bureaucracy and the government machinery are the fertile grounds where this weed grows.

Today we see the tentacles of corruption spread in the defence and health sector, Government welfare schemes, educational sector, transport department, getting driving license & all sorts of certificates which have been made mandatory, so on and so forth. The welfare schemes formulated with noble intentions do not reach the beneficiary in toto due to corruption.

Do we have a remedy for this malady? Yes we do, if we have the determination. We, here means each and every citizen of India, right from the poorest person in the lowest rung of the ladder to the so-called powerful, affluent who occupy the top most rung of the ladder. Right from jumping the queue to getting a contract - the desire to do this by any means, should be shun.

The Central Vigilance Commission, Central Bureau of Investigation and Lokpal should be headed by people of highest integrity; the organizations should

be given funds and powers proportionate to the responsibility given to them. Political interference of any sort should not be allowed.

The Lokpal and Lokayuktas Act, 2014 should be implemented in full swing – by this I mean – each and every citizen of India should be brought under its purview. The political class and the judiciary are not to be exempted. The private sector should also be covered under this.

Though the Right to Information Act, 2005 has brought in transparency to some extent; it has not been used to its full potential. The reason being the threat to the life of RTI Activists. Hundreds of Activists have been murdered. The Whistle Blowers Protection Act, 2013 though enacted to protect the whistle blowers, has not served the purpose. The amendment to the Act issued in 2014 diluted it still.

In my opinion fear of punishment will prove as a deterrent in any crime. Though we have rules that allow imprisonment in corruption cases, the law should be publicized and stringent punishment awarded so that it will reduce the number of crimes. Corruption cases should be tried and verdicts given within a short span, before the gravity of the crime is erased from the common man's memory.

Corruption – the root causes of it, the ways to eradicate it, the ill-effects of practicing it – should be taught in schools. The younger generation should be made aware of the ill-effects of corruption and ethical and moral values should be imbibed in them. They should be made to understand that a person who evades tax is doing harm to the nation's progress. To earn and hoard for the future generations without paying tax is injustice to the nation as well as to the future generation. Imbibing patriotic and societal values right from the formative years and inculcating and nurturing duty-consciousness in them will pave the way for an India where values will be respected and political or muscle power will not be dreaded.

The day when every citizen feels duty bound to pay all his taxes and vows to work for the development of his motherland and feels ashamed to accept bribes, I will proudly say मेरा भारत महान .

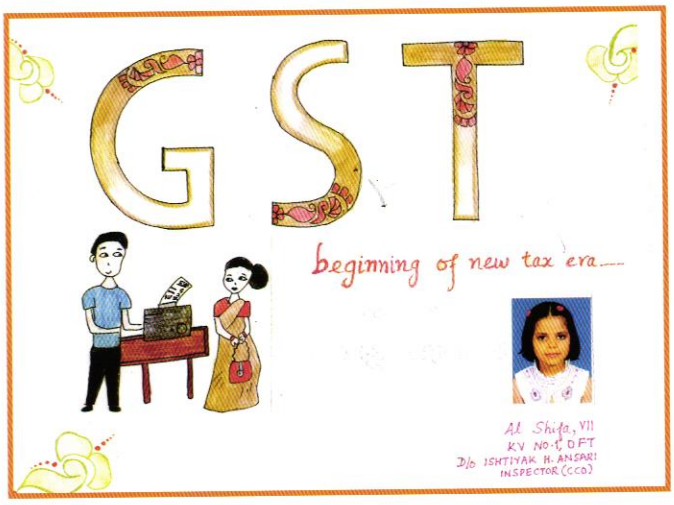

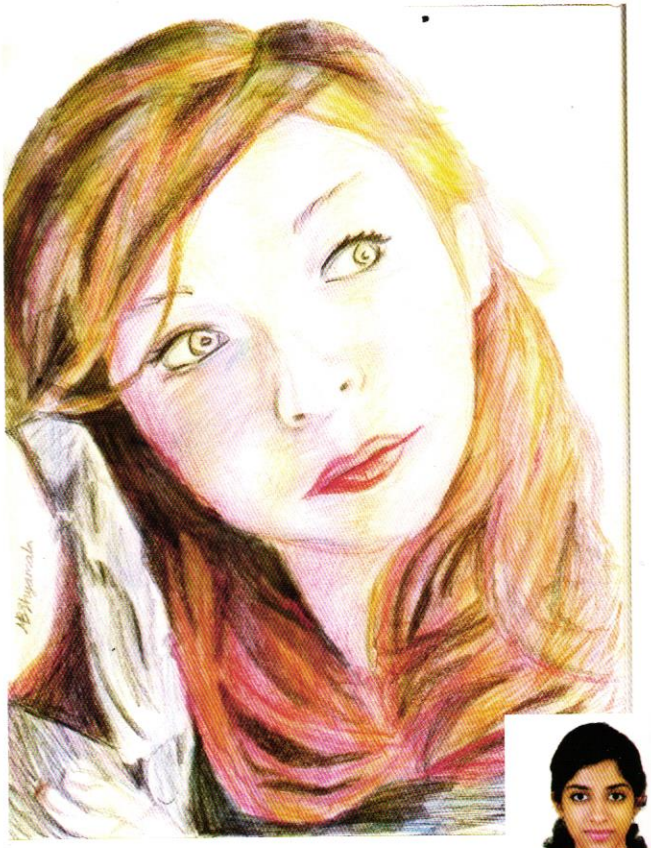

Shyamala M.B.
D/o.M. Rajarajeswari, Senior Translator

நதியின் பிழையன்று!!!

ஆக்கம் **ச. பாஸ்கரன்**
உதவி ஆணையர்
முதன்மை ஆணையர் அலுவலகம்

முகநூலில் முகம் புதைத்த மகளை கேட்டால்
என் பிறந்தநாள் வாழ்த்துக்களை முகநூலில் பதிவேற்றம்
செய்தவளே! அறிமுகம் செய்த நீயே இன்று அவச்சொல்
சொல்லல் ஆகுமா என்ற பதின் பருவ மகளின் வாதம் சரியா?

புகை பிடித்தான் மகன் என்று பகை கொண்ட தந்தையிடம்
பள்ளிப்பருவத்தில் எனை கடைக்கு அனுப்பி வாங்கி வரச்சொன்ன
நீரே எனை வசைப்பாடல் நியாயமா என்ற கல்லூரிக்கானை
உரைப்பது விதண்டாவாதமா?

பறக்கும் சாலையின் சந்திப்பில் இருட்டுக்கட்டியதால்
விபரீத விபத்துக்கள் வழக்கமானபோது விளக்குத்தூண் நடாமல்
விழிப்புடன் கடக்கவும் என்ற பதாகையை நட்டதுகண்டு
பதைத்த மனதிற்கு ஆறுதல் யார் சொல்லக்கூடும்?

புறவழிச்சாலையின் நடுவில் வாகன ஓட்டிகளின் நன்மைக்காக
அடர்ந்து வளர்ந்த அரளிச்செடியின் மலர் பறிக்கச்சென்று மரணத்தை
தழுவிய மடமையை மன்னிக்கும் மாண்பு யாருக்கு?

மரபணு வழி நடக்கும் யானை தடத்தில் பயணித்த
அப்பாவியை இடை மறித்து வதம் செய்த களிறுடன்
காட்டில் பகைமை, நாட்டில் நட்பு, காட்டை வாழ்விடமாக்கும்
மனிதரோடு பூர்வகுடி விலங்குகள் மல்லுக்கட்டுதல் யார் குற்றம்?

நாகரிகம் வளர்த்த கரைகள் கொண்ட நதி, வளர்ந்து விட்ட
மானுடர்கள் தம் வாழ்வை மென்மேலும் வளமாக்க வேண்டி
சற்றே மாசடைய செய்தால் சுய மறுசுழற்சி செய்யாமல்
மாசடைந்ததாக மனம் வருந்தி நிற்பது யார் பிழை?

विश्व में हिन्दी का डंका

देवेन्द्र सिंह सिकरवार
कनिष्ठ अनुवादक मु.आ.का तिरुच्चि

हिन्दी एक मात्र ऐसी भाषा है जिसका विश्व स्तर पर भव्य तरीके से सम्मेलन आयोजित किया जाता है। 10वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन 10-12 सितम्बर 2015 में भोपाल में किया गया था जिसमें कई देश-विदेश के गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। यह इस बात का द्योतक है कि विश्व में हिन्दी जानने की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में अपना पहला भाषण हिन्दी में देकर हिन्दी की गरिमा को पूरे विश्व में बढ़ा दिया है। आज अधिकतर भारतीय जो अन्य देशों में रह रहे हैं आपस में हिन्दी में ही बात करते है। प्रवासी भारतीय या विदेशियों को हिन्दी से परिचित कराने के लिए गूगल भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आइए गूगल सर्च पर उपलब्ध हिन्दी से संबंधित सामग्री का हम भारतीय हिन्दी प्रेमी भी लाभ उठाए। गूगल सर्च पर उपलब्ध कुछ महत्वपूर्ण लिंक निम्नलिखित है:-

राष्ट्रीय पोर्टल

राजभाषा विभाग [http://www.rajbhasha.gov.in]

भारतीय भाषाओं के लिए [http://www.ildc.in/hindi]

हिन्दी पत्रिकाएँ/शब्द कोश

कविता कोश [http://www.kavitakosh.org]

चंदामामा [http://www.chandamama.com]

साहित्य कुंज [http://www.sahityakunj.net]

पांचजन्य [http://www.panchjanya.com]

हिंदी नेस्ट [http://www.hindinest.com/]

लेखनी [http://www.lekhni.net/]

तद्भव [http://www.tadbhav.com]

अनुरोध [http://www.anurodh.net]

देवपुत्र [http://www.devputra.com]

निरंतर [http://www.nirantar.org/]

ताप्तिलोक [http://www.taptilok.com/]

उदंती [http://www.udanti.com]

हिमावलनी [http://www.himalini.com]

समकालीन साहित्य [http://www.samakalinsahitya.com]

हिन्दी-अं ग्रे ज़ी शब्दकोश [http://www.shabdmala.com]

उर्दू से हिन्दी शब्दकोश [http://urduwhindi..blogspot.com]

शब्दकोश.कॉम [http://www.shabdkosh.com]

नेशनल बुक ट्रस्ट [http://www.nbtindia.gov.in]

अख़बार

महानगर टाइम्स [http://www.mahanagartimes.net/]

अपनी दिल्ली [http://www.apnidilli.com]

हरि भूमि [http://www.haribhoomi.com/]

नवभारत टाइम्स [http://www.navbharattimes.com]

दैनिक जागरण [http://www.jagran.com]

दैनिक भास्कर [http://www.bhaskar.com]

बी.बी.सी.हिंदी खबरें [http://www.bbc.co.uk/hindi]

डेली हिंदी न्यूज [http://www.dailyhindinews.com]

अमर उजाला [http://www.amarujala.com]

एनडीटीवी खबर [http://www.ndtvkhabar.com/]

जनादेश [http://www.janadesh.in]

आजतक सबसे तेज [http://www.aajtak.in]

राष्ट्रीय सहारा [http://www.rashtriyasahara.com]

तहलका हिंदी [http://www.tehelkahindi.com/]

रजस्थान पत्रिका [http://www.rajasthanpatrika.com]

दैनिक हिन्दुस्तान [http://livehindustan.com]

प्रतिवाद [http://www.prativad.com]

इंडिया टुडे [http://hindi.india-today.com/]

दैनिक जागरण ई-पेपर [http://epaper.jagran.com/]

नई दुनियाँ [http://www.naidunia.com]

यूनीवार्ता [http://www.univarta.com/]

प्रभात खबर [http://www.prabhatkhabar.in]

देशबन्धु [http://www.deshbandhu.co.in]

खास खबर [http://www.khaskhabar.com/] देशकाल [http://www.deshkaal.com]

खबर इंडिया [http://www.khabarindiya.com]

इलैक्ट्रानिक मीडिया तथा सूचना क्रांति के बाद आज संपूर्ण विश्व एक ग्राम में बदल गया है। जिसका प्रभाव भाषाओं पर भी हुआ है। कई भाषाएं अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही हैं लेकिन हिन्दी बढ़ती दिखाई दे रही है। अब हिन्दी भारत में एक विस्तृत क्षेत्र की भाषा है तथा विश्व में संपर्क की भाषा बनती जा रही है। आज हिन्दी बिजिनेस मीडिया की खास भाषा बन गई है। यह सर्वविदित है कि तकनीकी विकास के साथ-साथ भाषाओं का भी विकास होता है। यह जान कर हैरानी होगी कि तकनीकी विकास इतनी तीव्र गति से हो रहा है कि नई-नई खोजों के लिए शब्द कम पड़ रहे हैं। ऐसी स्थिति में हिन्दी का महत्व और अधिक बढ़ जाता है क्योंकि हिन्दी में शब्दों का व्यापक भंडार है तथा नई शब्द रचना के लिए संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं के विशाल शब्द भंडार उपलब्ध हैं जिससे हिन्दी में नए शब्दों की रचना आसानी से की जा सकती है। अतः वह दिन दूर नहीं जब पूरे विश्व में हिन्दी का डंका बजेगा।

அழகு

கு.V.அசோகன்
மதிப்பீட்டு அதிகாரி

அல்லும் பகலுமால் அழகியல் என்பதே வாழ்வின் நிலையாம்!
சொல்லும் பகையும் சுடர்விடும் அறிவும் அல்லல்படுத்தும்!
கல்லும் கரையும் கனிந்த மனத்துள் முகிழ்ந்திடும் அன்பில்!
நெல்லும் பயிருமாய் நிறைந்த வயலில், வீசும்நல் சுகந்தம்!

மல்லை நகரில் மகேந்திரன் செய்த குடவறை அழகு!
முல்லைக் கொடியின் மனத்தைச் சூடிய பாரியின் அழகு!
எல்லையில்லா கற்பனைச் சுமக்கும், கவிதையும் அழகு!
தொல்லை என்னுமோர் சூழல் யாவுமே, தெளிவில்லா மனமாம்!

வேறு
தெளியா மனத்துள் தேடல் வையுங்கள்!
ஒலியாய் சுடராய், அறிவின் கேள்வன்
தெளியா மனத்தின் திறவுகோல் காட்ட,
ஒளியாம் அறிவின் உண்மை நாட்டுங்கள்!

வேறு
நல்லன வேண்டும்! நல்லன வேண்டும்!
நானிலம் போற்றும் நல்லன வேண்டும்!
அல்லன நீக்க அல்லன நீக்க.
ஆன்றநல் அறிவால் அனைத்தும் விலக்கு!

அல்லல் வேண்டாம், ஆத்திரம் வேண்டாம்!
தொல்லைகள் நீங்க தோல்வியைத் துரத்து!
எல்லையில் அழகுடன் இயைந்து பழகு!
வல்லவன் யாரோ! வகுத்தவன் யாரோ!

துள்ளுமோர் அழகில் சுடர்விடும் மனமே!
அள்ளக் குறையாத ஆனந்த நிலையோ!
கள்ளின் சுவையோ காமம் பெரிதோ!
பிள்ளைக் கனியமுதின் பிதற்றலும் அழகு!

துள்ளும் ஆவின் கன்றும் அழகு!
முள்ளை சுமந்த மலரும் அழகு!
பிள்ளைச் சுமந்த பெண்மையும் அழகு!
கொள்ளும் அழகில் குவலயம் போற்றுவோம்!

सूरज

पूरब का दरवाजा खोल
धीरे-धीरे सूरज गोल
लाल रंग बिखराता है
सूरज ऐसे आता है।
गातीं हैं चिड़िया सारी
खिलतीं हैं कलियाँ प्यारी
दिन सीढ़ी पर चढ़ता है
ऐसे सूरज बढ़ता है।
लगते हैं कार्यों में सब
सुस्ती कहीं न रहती तब
गर्मी कम हो जाती है
धूप थकी सी आती है
ऐसे सूरज ढ़लता है।

सिमरन कुमारी
सुपुत्री नवलेश प्रजापति, निरीक्षक

धूम्रपान

संकलन – देवेन्द्र सिंह सिकरवार,
कनिष्ठ अनुवादक,

धूम्रपान है दुर्व्यसन मुँह में लगती आग।
स्वास्थ्य, सभ्यता, धन घटे, कर दो इसका त्याग।।
बीड़ी-सिगरेट पीने से, दूषित होती वायु।
छाती छननी सी बने, घट जाती है आयु।।
रात-दिन मन पर लदी, तम्बाकू की याद।
अन्न-पान से भी अधिक, करे धन-पैसा बरबाद।।
कभी फफोले भी पड़ें चिक जाता कभी अंग।
छेद पड़ें पोशाक में, आग राख के संग।।
जलती बीड़ी फेंक दीं, लगी कहीं पर आग।
लाखों की संपदा जली, फूटे जम के भाग।।
इधर नाश होने लगा, उधर घटा उत्पन्न।
खेत हजारों फँस गये, मिला न उसमें अन्न।।
तम्बाकू के खेत में, यदि पैदा हो अन्न।
पेट हजारों के भरें, मन भी रहे प्रसन्न।।
करे विधायक कार्य, यदि बीड़ी के मजदूर।
तो झों पिड़यों से महल, बन जायें भरपूर।।
जीते जी क्यों दे रहे, अपने मुँह में आग।
करो स्व-पर हित के लिए, धूम्रपान का त्याग।।

भारतीय समाज में नारी की भूमिका एवं नारी सशक्तिकरण

सतवीर, कर सहायक,
सीमा शुल्क गृह, तूत्तुक्कुडि

भारतीय समाज में नारी को शक्ति स्वरूप माना गया है। प्राचीन काल से ही समाज निर्माण में नारी की विशेष भूमिका रही है। प्राचीन काल में मैत्री, गार्गी तथा अदिति जैसी विदुषियों ने भारत का नाम रोशन किया तथा भारत को विश्व गुरू की पदवी प्रदान करने में मजबूत आधार प्रदान किया था। नारी में भावना, ममता, कोमलता, स्नेह, लज्जा, त्याग आदि गुण पुरुष से अधिक होते है। यदि चाणक्यनीति की माने तो नारी मे पुरुष से चार गुना साहस होता है। समय-समय पर अपनी वीरता और साहस का परिचय नारी देती रहीं हैं। देवता-राक्षस युद्ध में महारानी कैकयी ने राज दशरथ की सारथी बन कर सहायता की थी। इंद्र से पारिजात वृक्ष पाने के लिए देवी सत्यभामा ने श्रीकृष्ण का साथ दिया था। सीता जी ने अपने सब सुख त्याग कर राम के साथ बनवास लिया था। इसी परम्परा के क्रम में मध्यकालीन युग में रानी लक्ष्मीवाई ने अंग्रेजों से लोहा लिया था। सुभद्राकुमारी चौहान के शब्दों में-

इनकी गाथा छोड़, चले हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेंट वाकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुया द्वंद असमानों में।

ज़ख्मी होकर वाकर भागा, उसे अजब हैरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

बेगम हजरत महल ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। रानी कर्मावती ने अपनी आन-बान-शान के लिए सहर्ष जीवन का त्याग कर दिया था। इसी प्रकार रानी हाड़ा ने अपने हाथों से अपना शीष काट कर युद्ध में गए अपने पति के पास भिजवा दिया था ताकि रानी का मोह उसके पति को युद्ध में विचलित न कर सके। आधुनिक समाज में भी हर क्षेत्र में महिलाएं अपनी अलग पहचान बना रहीं हैं तथा देश का नाम रोशन कर रही हैं।

नारी सशक्ति करण- "**यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता**" जहाँ नारियों का आदर होता है वहाँ देवता भी प्रसन्न रहते है वहाँ देवताओं का वास होता है। भारत वर्ष में हमेशा से नारियों को आदरणीय स्थान प्रदान किया गया है। किसी भी समाज के उत्थान एवं विकास के लिए वहाँ की नारियों का उत्थान एवं विकास होना आवश्यक होता है। नारी उत्थान एवं विकास से तात्पर्य है कि समाज में ऐसी व्यवस्था तैयार की जाए जिससे नारी की शिक्षा के साथ-साथ उसके सहज गुणों का विकास बिना किसी बाधा के हो सके, जीवन भय एवं तनाव से मुक्त हो, तभी हमारी आने वाली संतति में नारी के दैवीय गुण आ सकते हैं। अगर किसी समाज में चरित्रवान, बहादुर, संयमी, उद्यमी व्यक्तित्व दिखाई देते हैं तो इसका श्रेय उनकी माताओं को ही जाता है। क्योंकि अगर आपको राम, कृष्ण और शिवाजी जैसी संतान चाहिए तो उससे पहले कौशल्या, देवकी एवं जीजावाई जैसी माताओं का होना आवश्यक है। हमारे देश में तो भगवान को भी पहले माँ के रूप में माना जाता है "**त्वमेव माता च पिता त्वमेव**", धरती को भी माता कहा जाता है यहाँ तक कि देश को भी भारत माता कहा जाता है। इतिहास गवाह है कि जब-जब नारी की उपेक्षा की गई है या उसे भोग्या के रूप में देखा गया है तब-तब विनाश हुआ है। राम-रावण युद्ध, महाभारत आदि इसके उदाहरण हैं।

हमारे देश में आज समाज का स्वरूप बदल रहा है। यद्यपि कुछ स्थानों पर गरीबी, अशिक्षा के कारण स्थिति दयनीय भी है तथापि नारियाँ समय के साथ उन्नत हो रहीं हैं। चाहे चिकित्सा, अंतरिक्ष अनुसंधान, शिक्षा क्षेत्र हो या खेल का मैदान हो, सेना में मुस्तैदी से सेवा करनी हो या चाहे मेनेजमेंट या बैंकिंग क्षेत्र की बात हो भारतीय महिलाओं ने समाज की उत्तम सेवा कर देश का नाम रोशन किया है। कल्पना चावला, सुनीता विल्लियम्स ने जहाँ अंतरिक्ष अनुसंधान में भारत का नाम रोशन किया है वही गरीबी में पली-बढ़ी एम.सी. मेरीकॉम ने बॉक्सिंग में अपना नाम रोशन किया है। सायिना नेहवाल, सानिया मिर्जा, दीपा कर्माकर, गीता फोगाट ने खेल क्षेत्र में देश का नाम रोशन किया है।

समाज के हर क्षेत्र में महिलाओं ने अभूतपूर्व योगदान दिया है। महिलाओं को देश के सर्वोच्च पदों को संभालने का गौरव प्राप्त है। भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति बनने का गौरव श्रीमती प्रतिभा पाटिल को प्राप्त है वहीं भारत की प्रथम महिला प्रधान मंत्री बनने का गौरव श्रीमती इंदिरा गांधी को प्राप्त है। श्रीमती सरोजिनी नायडू को भारत की प्रथम महिला मुख्य मंत्री बनने का गौरव प्राप्त है। ऐसा कौन सा क्षेत्र है जिसमें महिलाओं ने अपनी योग्यता की छाप नहीं छोड़ी है। किसी ने ठीक ही कहा है-

"कोमल है कमजोर नहीं तू, शक्ति का नाम ही नारी है
जग को जीवन देने वाली, मौत भी तुझसे हारी है"

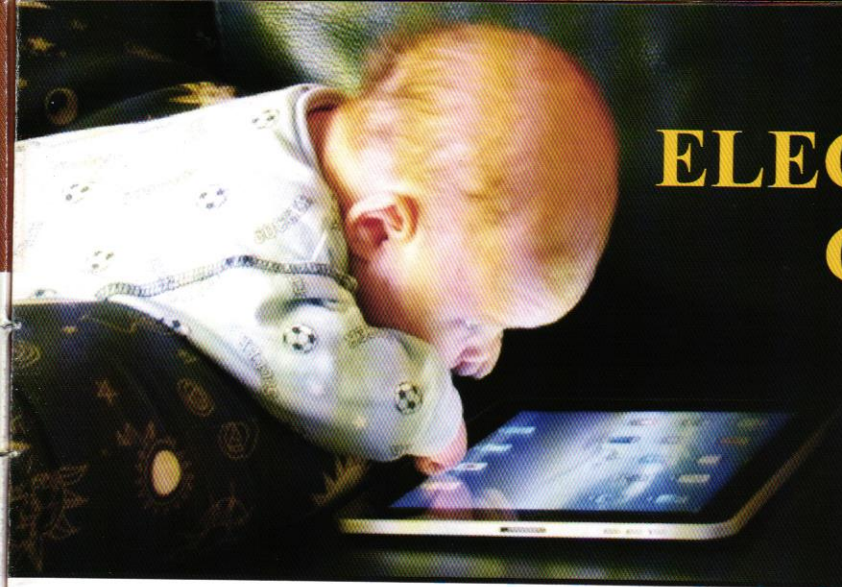

ELECTRONIC GADGETS

A BOON OR BANE FOR YOUNG CHILDREN

-By S. Baskaran,
Asst. Commissioner (CCO)

Nowadays, children as young as two years old play with electronic devices. These devices include video games, computers, tablets, smart phones PSP games etc. The present day younger generation are active consumers of such electronic products and the manufacturers are on the endless road of adding more and more new features to the devices to catch and cater to the imagination of children and youngsters. Mobile phones which were primarily intended as a communication tool rapidly evolved into smart phones that are being used more as an entertainment tool and mini computer rather than as a communication device. High end phones with internet connectivity have come in handy not only for on the spot entertainment to all age groups but also is extremely useful for business oriented tasks. So, in many ways these gadgets are truly a boon to the mankind.

Those positive aspects apart, the influence of the modern electronic gadgets, all pervasive in our lives, also has a negative effect, especially on our children. Young parents feel proud when they see their children handle mobile phones and other gadgets. The truth is that parents primarily use gadgets and devices to keep their children engaged. Exhausted and stressed out parents, when want to relax, find it easy to just hand their restless kids a tablet or a similar gadget loaded with a bunch of easily accessible educational apps. So, it is obvious that parents only introduce gadgets to their children for the sake of convenience. They may repent in future as gadgets found convenient at one point of time is felt as a curse in the hands of teens. The following provides an insight in to the positive and negative aspects of electronic devices on young children:

Positive Use

- For children younger than pre-school age, electronic devices may help to

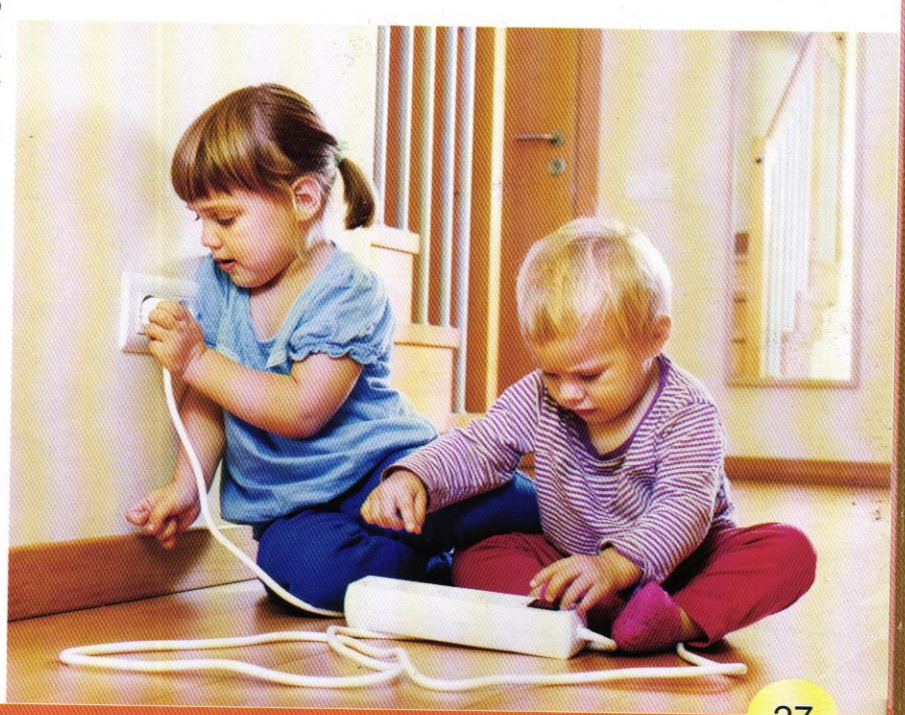

stimulate the senses and imagination, listening abilities and also impact learning of sounds and speech;

- Games played in electronic devices help to improve the analytical skills and creativity. Children imitate and improvise their playing pattern;
- Using computers may improve their computer literacy;
- Mastering games builds confidence and develops hand eye coordination;
- Games, encouraging players to move up levels and earn high scores may help develop mathematical skills of children.

Negative Impact

- Children easily learn to use electronics but do not know how to tie their own shoes;
- Children glued to gadgets are deprived of outdoor activities which are vital for their physical and mental well being. It is important that they spend some time for outdoor activity with family and friends;
- When children play violent games for a long period of time, they tend to be more aggressive and prone to confront their parents, peers and teachers;
- Children who spend significant time on devices may have difficulty concentrating on their studies;
- Excessive computer exposure can be addictive which can lead to a sedentary lifestyle, poor health and time manage ment and eating habits.

Innovations are indeed a boon, but abuse of technology undoubtedly brings negative effects. So, regulated use of gadgets at home and outside is the need of the hour to ensure that technology is helpful in proper grooming and does not result in dooming the future of our children.

साहिल और लहरें

सतवीर सिंह, कर सहायक,
सीमा शुल्क गृह तूतुक्कुडि

कितना गहरा होता है समंदर,
जैसे मन इस तन के अंदर।
जैसे-जैसे उठतीं थीं ऊँची लहरे,
वैसे-वैसे उठते थे विचार गहरे।
क्या है इनका चंदा से नाता,
ज्वार-भाटा आखिर क्यों आता।

क्यों है ये इतना विशाल,
क्या है इसमें ऐसा खास।
जो नदियाँ दौड़ी आतीं हैं,
आकर इसमें मिल जातीं हैं।
क्यों होता इसका जल खारा,
क्या ये भी है किसी गम का मारा।

आखिर लहरें क्यों आतीं है,
क्यों साहिल से टकरातीं है।
जब साहिल से मिल जातीं हैं,
तो लौट के वापस क्यों जातीं हैं।
क्या साहिल से इनको प्रेम है,
जो ये मिलने चली आती हैं।
या बदनाम न हो प्रेम इनका,
इसीलिए वापस लौट जातीं हैं।

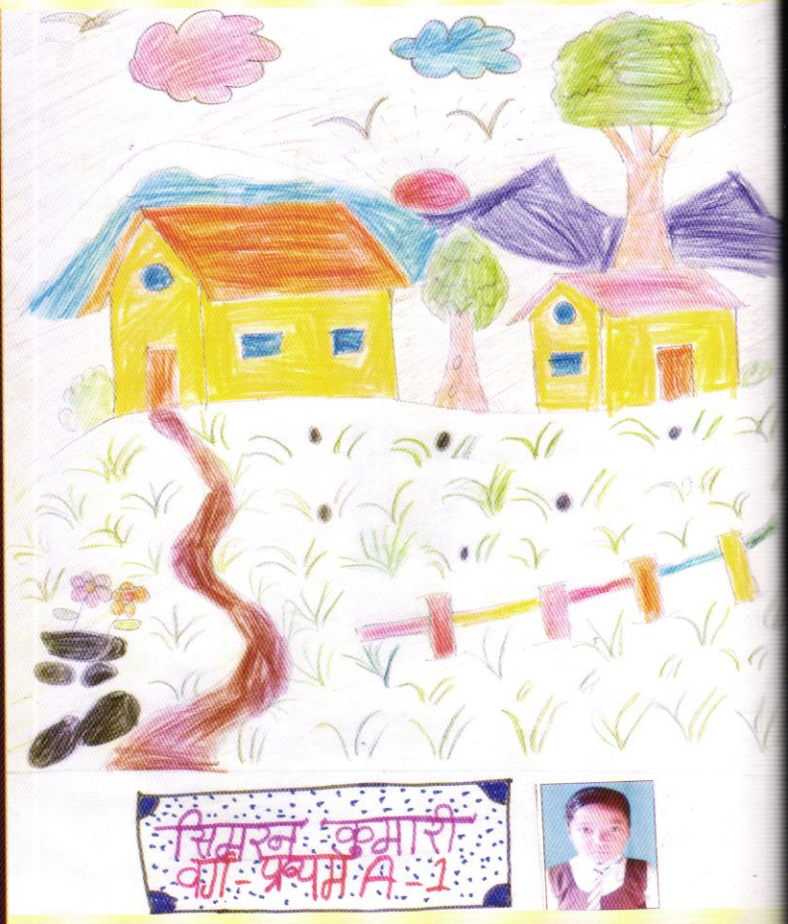

A LESSON LEARNT

(An elegy)

M. Rajarajeswari,
Senior Translator

That day was the day of doom
Dare not could I imagine whom
Will leave me, without a word
Left me here as a wingless bird.

Never I dreamt that death will come
So unannounced as it did come
She passed away without prior notice
Defying all rules that call for notice.

To live without food one cannot
But have food without her I could not
Spotting a thoughtless mind is impossible
Thoughts other than of her were not possible.

A friend was she in times of need
A guru, moral and spiritual indeed.
Ocean of love is what I can say,
To describe her in the most stingy way.

High I hold my head for being hers
A sinking boat she left me in an ocean of tears
Life without her was miserable
But neither was she substitutable.

A smiling kid in the same boat rather
Ready to live a whole life without a mother
Taught me what was unlearnt all these years,
"Lives are there more miserable than yours

Come out of your nut shell and see
There are ships in deeper sea
Caught in storm and still strive
And with efforts they do survive.

ODE TO A SON

The day starts with determination
Scolding, thrashing need termination
He, my loving son, is not that bad
I, when young might've been equally bad.

The wake up call is given ahead of schedule,
To be on time after coaxing and cajoling,
A glance at the clock tells 'behind schedule',
Know do I pretty what's in the offing.

Volley of commands start shooting out
Brush your teeth, rush a bath,
Have a meal, pack and be out,
Lest the school bus be on its path.

When you are away and gone ,
The house, my boy, looks forlorn,
To hold you in my arms I long,
And the day sans you seems too long.

Evening wait is for your arrival,
Heart full of oaths of non-revival,
Of slapping, beating and harsh words,
But only kisses and loving words.

A happy me and an hour to play,
Brings joy to your face so to say,
Home work and supper take their toll,
And bonhomie no doubt is set to roll.

In bed you seem a tender flower,
Innocence writ large you kiss good night,
With bag full of advice I bid good night,
To be good you promise to endeavour.

With a heart filled with remorse,
I do curse myself for turning worse,
Forgive me, MY CHILD, for what I did,
Sheer love and care made me do what I did.

POEM

Dr. **T.S. Geetha**
Associate Professor of English
w/o Shri S. Baskaran, Assistant Commissioner (CCO)

INDIAN WEDDING

Marriage, a celestial bond-
and Indian marriage holier
still, widening the circumference
of two small circles into a large on e;
many a ceremony, many a ritual and
what lots, before a wedding
is solemnised;
not only religion, caste and community,
but even sub-caste and language
do match, along with status
and dower too!
and even if everything abides by the rule,
a flop there is somewhere
to make the girl widely stare!
when such the situation is, can
inter-caste and inter-religious
bonding fix tight?
Preaching is easy, practice tough;
Unless one entirely shuns his joy,
harmony there'll be none; for one
man's meat can never be the other's
relish! but be it an arranged
or an unarranged marriage, the couple
do cling on to one Indian rule great-
never the marriage do break!
(though, today marriages, just a few years old
find the couple at law's threshold
competing with westerners there too!)

IN 'LAWS'

In laws, where they are
Ought to strengthen the bridge
Between the two families;
should never talk in secrets
with their brethren;
should respect the new-comer
and the new family;
should look in to the
joys of the newly-wed;
should never interfere or
poke their noses in
private matters between
the two-
should never keep grumbling;
if cannot help in their problems,
should never worsen it,
should be ever careful in
not imposing their closeness
or priority .....for, in a
marriage, the first priority
is between the concerned two;
others ever fall in line-
be it mom or dad,
sis or brother or any one
called 'so close' for that matter;
if all this is looked into
deep, we are 'close' in – laws;
If not, ever out – laws!

ऐ गुजरने वाले साल

राम राज मीना, निरीक्षक
सीमा शुल्क गृह तूतुक्कुडि

ऐ गुजरने वाले साल,
मेरा एक काम कर देना
जिनकी वजह से हँसी और खुशी के
पल आए हैं जीवन में, मेरे
उन सभी को मेरी तरफ से
धन्यवाद कर देना।
ऐ बीते हुए साल,
तू, एक और मेरा काम कर देना
जिनको मिलाया है और मेरा बनाया है, तूने
उन सब के जीवन में,
बहार भर देना।
कसी का दिल ना दुखे मेरे द्वारा,
बस इतना एहसान कर देना।
ऐ गुजरने वाले साल,
मेरा एक काम कर देना।।

हिन्दी दिवस समारोह – सीमा शुल्क गृह तूत्तुक्कुडि।

विजेताओं को पुरस्कार वितरित करते हुए श्री के.वी.वी.जी. दिवाकर, आयुक्त

विजेताओं को पुरस्कार वितरित करते हुए श्री वी. शिवकुमार, अपर आयुक्त

विजेताओं को पुरस्कार वितरित करते हुए श्री के.वी.वी.जी. दिवाकर, आयुक्त

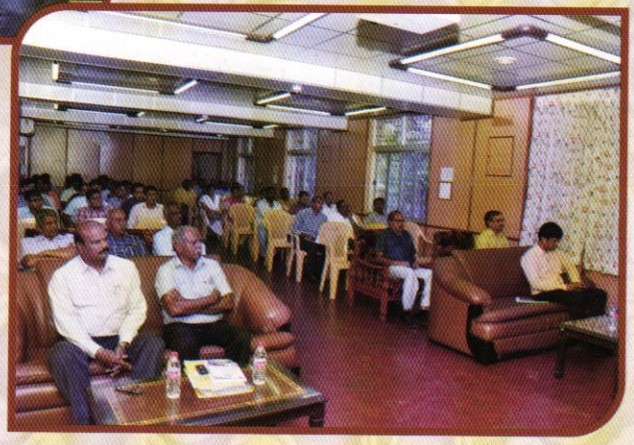

सीमा शुल्क गृह तूत्तुक्कुडि में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह 2017 में उपस्थित अधिकारीगण।

GST out-reach programme – Customs procedure in the post GST era

The Assistant Commissioner, Customs Division, Cuddalore Shri K. Ramesh, addressed a trade meeting at Madurai on 20.12.2017 on "IGST; REFUNDS BEING GIVEN FASTER' and participated in a Workshop on 'E-SEALING IN EXPORTS' in GST regime, organized by the Confederation of Indian Industry, Puducherry regime on 22.12.2017 and elucidated the new procedure of self sealing by the exporters (E-sealing) for facilitating hassle-free exports.

IGST: refunds being given faster

'Most of the delay is due to errors in giving details of shipping bills'

SPECIAL CORRESPONDENT
MADURAI

Initial technical glitches and errors made by traders in providing shipping details under IGST had led to a lot of delays in providing the refund, said Joint Commissioner of Central GST and Central Excise, V. Pandiraja.

Addressing a meeting of manufacturers and traders involved in exports, he said that most of the delay was due to errors in giving details of shipping bills. Now, refunds were being done faster.

Under the post-GST regime, works of Central Excise and Customs have been separated. From January 1, 2018, Chief Commissionerate Customs (Preventive), Tiruchi, would become functional and all customs-related functions across Tamil Nadu, except for Chennai region, would be under it.

For clarity: K. Ramesh, Assistant Commissioner, speaking at a meeting in Madurai on Wednesday. • PHOTO: S. JAMES

K. Ramesh, Assistant Commissioner of Customs, Cuddalore Division, said that additional Customs divisions would come up at Madurai, Tiruppur, Chengalpattu. He said that under the GST regime claiming refund under IGST had been made hassle-free. "It is online with less human intervention. It would be processed automatically and quickly," he said.

Exports can be made without payment of IGST, i.e., through letter of understanding (LUT) or bond.

All applications of LUT and bonds should be accepted within three working days.

For those who export goods on payment of IGST, no separate refund claim is required. The shipping bill itself is a claim application. However, Mr. Ramesh said that export general manifest should be provided without any error so that the system could automatically process the refund.

"In many cases, lack of EGM, failure to provide right bank details led to failure in validation of the refund claim," he said.

Besides, he said that e-sealing of containers was made mandatory from January 1,2018. The e-sealing would be done through radio frequency identification seals that would carry details of the materials being exported and details of the exporter, time and date of sealing. "Any tampering of the seal will lead to manual verification of goods," he said.

This process of e-sealing ensured ease in exports and would save time for the exporter. Only those consignments that are selected by risk management division would be manually examined.

Assistant Commissioners, A. Muthiah (CGST and CE), V. Rajkumar Moses (Customs) were among those who spoke.

ஏற்றுமதியில் 'மின்னணு சுய சீல் முறை': புதுச்சேரியில் சிறப்பு கருத்தரங்கம்

புதுச்சேரி, டிச. 23–

சரக்கு ஏற்றுமதியில் நம்பக தன்மை அடிப்படையிலான வர்த்தக சூழலை, 'மின்னணு சுய சீல் முறை' ஏற்படுத்தியுள்ளது என, சுங்க வரி அதிகாரிகள் தெரிவித்தனர்.

இந்திய தொழில் கூட்டமைப்பு புதுச்சேரி கிளை சார்பில், சரக்கு ஏற்றுமதிக்கான 'மின்னணு சுய சீல்' குறித்த சிறப்பு கருத்தரங்கம், புதுச்சேரி ஓட்டல் அதிதியில் நேற்று நடந்தது. இந்திய தொழில் கூட்டமைப்பு புதுச்சேரி கிளை சேர்மன் ஸ்ரீகாந்த் தலைமை தாங்கினார்.

திருச்சி சுங்கவரி இயக்குனரக கமிஷனர் அசோக் நோக்கவுரையாற்றினார்.

கருத்தரங்க முதல் அமர்வில், கடலூர் சுங்க வரி பிரிவு உதவி கமிஷனர் ரமேஷ், இரண்டாம் அமர்வில் ஐ.பி., ட்ராக் சொலூஷன் நிறுவன முதன்மை செயல் அதிகாரி சுதந்திர டங்கனிகோட், மூன்றாம் அமர்வில் சத்வா நிறுவன குமார் தேவராஜ் கலந்துரையாடினர்.

கருத்தரங்கில், சுங்கவரி அதிகாரிகள் முன் வைத்த கருத்துகள்:

ஏற்றுமதி – இறக்குமதி நாட்டின் பொருளாதார வளர்ச்சிக்கு முக்கிய பங்காற்றி வருகின்றன. அந்நிய செலவாணியை ஈட்டித்தருகின்றன.

■இந்திய தொழில் கூட்டமைப்பு புதுச்சேரி கிளை சார்பில், ஓட்டல் அதிதியில் நேற்று நடந்த ஏற்றுமதிக்கான மின்னணு சீல் சிறப்பு கருத்தரங்கில், கடலூர் சுங்கவரி பிரிவு உதவி கமிஷனர் ரமேஷ் பேசினார். ■திருச்சி சுங்கவரி இயக்குனரகம் கமிஷனர் அசோக், இந்திய தொழில் கூட்டமைப்பு புதுச்சேரி கிளை சேர்மன் ஸ்ரீகாந்த் மற்றும் தொழில் நிறுவன பிரதிநிதிகள் கருத்தரங்கில் கலந்து கொண்டனர்.

ஏற்றுமதியை பொறுத்த வரையில், பொருட்களை உற்பத்தி செய்யும் நிறுவனங்கள், தங்களுடைய சரக்குகளை கன்டெய்னர்களில் அடைத்து ஏற்றுமதி மண்டலத்திற்கு அனுப்புகின்றன. அங்கு, சுங்க அதிகாரிகள் முன்னிலையில் சோதிக்கப்பட்டு பிளாஸ்டிக் சீல் வைக்கப்படுகிறது.

உலகம் முழுவதும் ஏற்றுக்கொள்ளப்பட்ட நடைமுறையாக இது, இருந்து வருகிறது.

தற்போது, இதற்கு மாற்றாக நம்பக தன்மை அடிப்படையிலான வர்த்தக சூழ்நிலை ஏற்படுத்தும் நோக்கில், ஏற்றுமதி நிறுவனங்கள் அவற்றின் சரக்கை சுயமாக சீலிட்டு அனுப்பும் 'மின்னணு சுய சீல்' முறை அறிமுகப்படுத்தப்பட்டுள்ளது. இவையும் உலக நாடுகள் ஏற்றுக் கொண்டுள்ளன.

சுங்க அதிகாரிகள் மேற்பார்வையில், தொழிற்சாலையிலேயே சரக்குகளை சீல் செய்து நேரடியாக ஏற்றுமதி செய்யும் நிறுவனங்கள் இத்திட்டத்தில் சேரலாம்.

இந்த நடைமுறை, ஏற்றுமதி நிறுவனங்களுக்கு நல்ல சூழலை ஏற்படுத்தியுள்ளது. இதன்படி ஏற்றுமதி செய்யும் நிறுவனங்களுக்கு இ–சீல் எண் வழங்கப்படும்.

இதனுடன் சரக்கு விபரம், சுயமாக சீல் செய்த நாள், நேரம் உள்ளிட்ட அனைத்து தகவல்களையும் ஏற்றுமதி நிறுவனங்கள் சுங்கவரி இணையதளத்தில் பதிவேற்றம் செய்ய வேண்டும்.

ஏற்றுமதி மண்டலத்திற்கு சரக்கு சென்றடைந்ததும் அங்கு மின்னணு சுய சீல் ஸ்கேன் செய்யப்படும்.

அப்போது, கன்டெய்னரில் உள்ள பொருட்கள், அனுப்பிய நிறுவனம், எங்கு செல்லுகிறது என, அனைத்து தகவல்களும் திரையில் தோன்றிவிடும். கிரீன் சிக்னல் கிடைத்ததும் எந்த சோதனைக்கும் காத்திருக்காமல் சரக்கை ஏற்றுமதி செய்துவிடலாம்.

இத்திட்டம் மூலம் சரக்கு ஏற்றுமதியும் விரைவாக நடைபெறும். இம்முறையில், சரக்கு ஏற்றுமதிக்கு நம்பகமான பாதுகாப்பு கிடைக்கும்.

இவ்வாறு அவர்கள் தெரிவித்தனர்.

இந்திய தொழில் கூட்டமைப்பு புதுச்சேரி கிளை நந்தகுமார் உட்பட பலர் கலந்து கொண்டனர்.

26.10.2017 को सीमा शुल्क गृह, तूत्तुक्कुडि में दस्तावेज प्रबंधन प्रणाली
का उद्घाटन करते हुए मुख्य आयुक्त श्री रंजन कुमार राउतरे

योग गुरु श्री एस.एल. ठाकुर, मुख्य आयुक्त (सेवा निवृत्त) योग सिखाते हुए। मुख्य आयुक्त,
आयुक्त, सीमा शुल्क, तिरुच्चि एवं आयुक्त, जी एस टी एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क योग करते हुए।

Veda Vidya Printers, Srirangam. Cell : 94861 65309

गणतंत्र दिवस, 2018

मुख्य आयुक्त श्री रंजन कुमार राउतरे

ध्वजारोहण करते हुए

विशिष्ट सेवा के लिए प्रशस्ति पत्र देते हुए